The University of Osaka
Institutional Knowledge Archive

Title	जापान के सम्बन्ध में गांधी जी के कुछ विचार
Author(s)	Singh, Ved Prakash
Citation	外国語教育のフロンティア. 2020, 3, p. 301-310
Version Type	VoR
URL	https://doi.org/10.18910/75643
rights	
Note	

The University of Osaka Institutional Knowledge Archive : OUKA

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

The University of Osaka

जापान के सम्बन्ध में गांधी जी के कुछ विचार

Some thoughts of Gandhi ji about Japan

SINGH, Ved Prakash

Abstract

In this paper, an attempt is made to find some impressions about Japan by Indian freedom fighter and father of nation Mohandas Karamchand Gandhi (1869-1948). It was in England (1891-93) that Gandhi ji was first exposed to Japan through the writings of Sir Edwin Arnold. As a young student, Gandhi ji was pleased to read about the culture and society of Japan. While in South Africa, he keenly observed a Japanese student's self-respect and was moved by the instance. After he returned back permanently to India (1915-1948), Gandhi ji wrote and spoke extensively about positive aspects in Japanese societies for all Indians to recognize, inspire and adopt them for a holistic nation-building. Specifically, positive aspects such as cleanliness, patriotism, total literacy, love for one's language, education for all, education in one's language, hardworking nature, self-sacrifice for the nation etc. were stressed by Gandhi ji in his writings and lectures.

Some Japanese also visited Gandhi ji at his Ashram in India. Rev. Nichidatsu Fujii visited Wardha Ashram in 1933. His impression on Gandhi ji and Gandhi ji's impression on him and their mutual admiration have lasted very long. Gandhi ji even adopted his prayer 'NAMU MYO HO RENGE KYO' in his morning and evening prayers. Nichidatsu Fujii received his new name as 'FUJI GURUJI' given by Gandhi ji. Nichidatsu Fujii wrote his autobiography and discussed Gandhi ji's nonviolence philosophy in his book named 'My Non Violence: An Autobiography of a Japanese Buddhist'.

In this article, some other aspects of India-Japan relations are also discussed. Gandhi ji severely criticized Japanese merchants as they exported cheap clothes to India which in return contributed to lose of jobs to Indian laborers and their exploitation.

Keywords: JAPAN, GANDHI JI, RELATION, POSITIVE AND NEGATIVE THINGS

मोहनदास करमचंद गांधी (1869-1948) का जापान से प्रशंसा-आलोचना का सम्बन्ध रहा है। गांधी जी ने जापान के बारे में कभी थोड़ा विस्तार से और कभी केवल नामोल्लेख द्वारा विभिन्न संदर्भों में अनेक बार लिखा और बोला है।[1] उन्होंने इन लेखों और भाषणों में जापान के लोगों की देशभक्ति, बलिदान, विनम्रता, मेहनत, एकता, भाषा-प्रेम, शिक्षा-व्यवस्था, सहकारी संस्थाएं, सफाई और सौन्दर्य-चेतना आदि की अनेक बार प्रशंसा की है। जापान के इन गुणों को अपनाने के लिए भारतीयों से अनुशंसा की। वहीँ दूसरी ओर जापानी समाज में आ चुके पश्चिमीकरण, साम्राज्यवाद, यन्त्र-प्रियता, व्यापार के शोषणकारी तरीके आदि की आलोचना की है।

गांधी जी दुनिया भर के सुन्दर और उपयोगी विचारों के लिए अपने मन और घर की खिड़कियों को खोले रखने की पैरवी करते थे।[2] उनसे मिलने उनके पास दुनिया भर से लोग और पत्र आते थे। गांधी जी दुनियाभर के विचारों के लिए अपने आश्रम और मन के दरवाजे खुले रखते थे। कुछ ऐसा ही सम्बन्ध गांधी जी का जापान से था।

गांधी जी को जापान से समय-समय पर बहुत कुछ सीखने लायक लगा। उन्होंने उसकी प्रशंसा की और उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाया। जापान के कई कार्यों की आलोचना भी की। इस लेख में यह देखने का प्रयास किया जाएगा कि गांधी जी किस समय जापान के किन विचारों से प्रभावित हुए?

गांधी जी ने जापान को विस्तार से इंग्लैंड में सन् 1888 से सन् 1891 के आसपास सर एडविन अर्नाल्ड (1832-1904) के लेखों के जरिये जाना।[3] इसके बाद सन् 1893 से सन् 1914 के बीच दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए जापान की कुछेक विशेषताओं को उन्होंने जोहानिसबर्ग में एक जापानी युवक के माध्यम से अपनी आँखों से देखा और स्वाभिमान के उदाहरण के रूप में हमेशा याद रखा।[4] बाद में वे नौ जनवरी 1915 ई. को हमेशा के लिए भारत आ गए। गुजरात के कोचरब में 'सत्याग्रह आश्रम' (1915 ई. में), 'साबरमती आश्रम' (1917 ई. में) और फिर वर्धा में 'सेवाग्राम आश्रम' (1936 ई. में) बना कर रहने लगे तो अनेक जापानी उनके पास मिलने आए और कुछ सहचर भी बने।[5] उनमें से एक प्रमुख आश्रमवासी जापानी साधु निचिदात्सू फूजी जी थे। जिन्हें गांधी जी 'फूजी गुरुजी' के नाम से पुकारते थे।[6] भारत में रहते हुए सन् 1915 से सन् 1948 तक अनेक बार जापानी लोगों से मुलाकात की।

जापानी स्वाभिमान और विनम्रता का पहला अनुभव- गांधी जी 23 मई 1893 से लेकर 19 दिसम्बर 1914 तक अफ्रीका में रहे। गांधी जी ने अफ्रीका में रहते हुए जापान के एक विद्यार्थी के व्यवहार को देखकर उसके गुणों की तारीफ एक लेख में की थी। जापान के बारे में उनका यह पहला अनुभव था। इस अनुभव का उदाहरण गांधी जी ने अफ्रीका में भारतीयों को दृढ़ और विनम्र बनाने के लिए उपयोग किया। यह जापानी विद्यार्थी जोहानिसबर्ग में एक वकील के पास किसी काम से आया था। वे वकील और पत्रकार के साथ सामाजिक कार्यकर्ता और सत्याग्रही का काम करते थे। जापानी लड़का जिस वकील से मिलने आया, वह व्यस्त होने के कारण उससे उस समय न मिल सका। वह जापानी लड़का बाहर वकील का इंतजार करने लगा। उसी समय एक अंग्रेज आया और सीधे ही वकील के कमरे में जाने लगा। यह देख जापानी लड़के ने उस अंग्रेज को रोककर कहा कि आपसे पहले मैं आया हूँ इसलिए आप मेरे बाद ही जा सकते हैं। अंग्रेज व्यक्ति ने कहा कि मुझे जरूरी काम है। उसने जापानी लड़के से पहले जाने की इजाज़त माँगी तो जापानी लड़के ने इजाज़त दे दी।[7] इस घटना का जिक्र करते हुए गांधी जी भारतीयों के मन में स्वाभिमान पैदा करना चाहते थे।

जापान के विषय में गांधी जी का सबसे पहला लेख- गांधी जी जब इक्कीस-बाईस साल के थे तब उन्होंने सर एडविन अर्नाल्ड के लेखन के माध्यम से जापान को जाना था। दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए गांधी जी ने कई बार जापान और जापानियों का जिक्र किया। जब वे तैंतीस साल के थे, तब उन्होंने जापान विषयक पहला लेख लिखा। यह लेख उन्होंने 1903 ई. में जापान की सूतक (Quarantine) व्यवस्था के बारे में लिखा। कोई भी व्यक्ति बिना स्वास्थ्य जाँच के

जापानी जमीन पर नहीं उतर सकता है। गांधी जी ने 'मेडिकल रिपोर्ट' सम्बन्धी एक लेख पढ़कर 'इंडियन ओपिनियन' के अपने पाठकों से इस व्यवस्था की खूब तारीफ की थी।

जापान के बारे में 10 सितम्बर 1903 ई. में अंग्रेजी में अपने पत्र 'इंडियन ओपिनियन' में लिखा था। जापान के बारे में उनका सबसे पहला लेख ऐसे शुरू होता है-

"The alert enterprise of Japan has long been the admiration of the world. In its quarantine regulations, it equals, if not surpasses, Western countries. A writer in Medical Record says that the Japanese quarantine rules are strict, for the Chinese and Korean pestilence centers are only two or three days distance by steamer, and Japan has much commerce with the mainland."[8]

जापान के विषय में जब उन्होंने लेख पढ़ा तो उसकी सूतक व्यवस्था से प्रभावित हुए। अपने देश को बेहतर बनाने के लिए जिस श्रम और उद्यमशीलता की जरूरत है, उसे गांधी जी भारतीयों के मन में पैदा करना चाहते थे। जापानियों की 'चौकन्नी उद्यमशीलता' की प्रशंसा करने का मकसद भारतीय पाठकों के मन में जापान के अनुकरणीय कार्यों के प्रति उत्सुकता जगाने का भाव रहता है। गांधी जी सफाई पर बहुत बल देते थे, इसलिए जापान की इस व्यवस्था के बारे में जानकर उन्हें अधिक प्रसन्नता हुई। अपने देश के प्रति इस तरह से भी प्यार किया जा सकता है। जापान में किसी प्रकार की कोई बीमारी न आ पाए इसलिए सूतक की कड़ी व्यवस्था की गई।

जापान और रूस की लड़ाई को 'राक्षसों की लड़ाई' कहा- जापान की स्वास्थ्य-विषयक चौकस व्यवस्था के बाद गांधी जी ने जापान और रूस की लड़ाई को "राक्षसों की लड़ाई" मानते हुए 11 मार्च 1905 को 'इन्डियन ओपिनियन' में गुजराती में लेख लिखा। उन्होंने इसकी व्यापकता देखते हुए इसे 'इतिहास की सबसे बड़ी लड़ाई' माना। चीन के पूर्वोत्तर मंचूरिया क्षेत्र में मुकदन में यह युद्ध लड़ा जा रहा था। गांधी जी ने इसके बारे में जापान के युद्ध कौशल की तारीफ की और इसे अब तक के इतिहास की सबसे बड़ी लड़ाई बताया-

"रणक्षेत्र से जो ख़बरें आ रही हैं उनसे पता चलता है कि मुकदन के पास जापान और रूस के बीच आजकल जो लड़ाई चल रही है वह प्राचीन एवं अर्वाचीन इतिहास की सबसे बड़ी लड़ाई गिनी जाएगी।"[9]

जापान और रूस के दस लाख सैनिकों ने इस लड़ाई में हिस्सा लिया। जापान की ओर से मार्क्विस ओयामा ने इस लड़ाई का नेतृत्व किया। जापानी सैनिकों को हिम्मत और सहनशक्ति की गांधी जी तारीफ करते हैं। इस लड़ाई से हिंसा नहीं आत्म बल लेने का विचार गांधी का है। इसलिए वे रूस और जापान दोनों को हिंसा के कारण राक्षस की संज्ञा देते हैं। गांधी जी जापान के युद्ध कौशल की कम बल्कि विज्ञान, जुनून और आत्म बल की तारीफ प्रमुखता से करते हैं।

जापानी कौशल ज्यूजित्सू की तारीफ- गांधी जी ने जापानियों के आत्म बल के प्रशंसक होने के कारण मार्शल आर्ट्स की भी तारीफ की। जापान में एक ऐसा कौशल होता है जिसे ज्यूजित्सू [柔術] कहते हैं। लम्बा-चौड़ा और बड़ा शरीर ही सबकुछ नहीं होता है। उसे मजबूत करने की कला ही महत्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में गांधी जी ने ज्यूजित्सू की तारीफ करते हुए लिखा-

"शरीर के भिन्न-भिन्न जोड़ और हड्डियों पर कब क्या असर पड़ता है यह जापानी लोग बड़ी अच्छी तरह समझ सकते हैं और इसलिए वे लोग अजेय बन गए हैं।...जापानियों ने उसी बात का सम्पूर्ण शास्त्र बनाया है।...इस शास्त्र का जापानी नाम ज्यूजित्सू है।"[10]

यहाँ भी वे रूस और यूरोप के बड़े शरीर वाले लोगों से जापानियों की तुलना करते हैं। जापानी समाज ने अपने शरीर को किस प्रकार मजबूत बनाया है? इसका कारण ज्युजित्सू जैसी कलाओं में छिपा है। उन्होंने बिना हथियार के अपने शरीर के बल से भी शत्रु को पराजित करने का कौशल सीख रखा है। गांधी जी यहाँ भी हिंसा और लड़ाई के उदाहरणों में आत्म बल को प्रमुखता देते हैं। भीतरी रूप से शरीर को सबल करने की प्रेरणा ज्यूजित्सू के उदाहरण से गांधी जी अपने पाठकों और देशवासियों को देना चाहते थे।

जापानी स्वदेशाभिमान और एकता की प्रशंसा- शरीर के बाहर की तुलना में भीतर का बल प्रमुख है। यही बात गांधी जी बड़े शक्तिशाली दिखने वाले देशों पर भी लागू करते हैं। जापान जैसे छोटे से आकार के देश द्वारा रूस जैसे महादेश को हरा देने की ऐतिहासिक घटना से भारतीयों में भी जापानियों की तरह स्वदेशाभिमान और एकता पैदा करना चाहते हैं। 1905 के एक लेख में जापान द्वारा रूस को हराये जाने की घटना का विस्तृत वर्णन करते हैं। इस वर्णन में जापान की जीत का कारण क्या है? उससे हम क्या सीख सकते हैं? इस बारे में आगे इसी लेख में उन्होंने बताया-

"ऐसे महा कठिन पराक्रम का स्रोत क्या है? इस प्रश्न का उत्तर हमें बार-बार दुहराने की आवश्यकता है, और वह एक ही है- ऐक्य, स्वदेशाभिमान, मर-मिटने की चाह। इस सम्बन्ध में सभी जापानियों का उत्साह एक सा है। इसमें कोई किसी को ज्यादा नहीं मानता और उनमें फूट फाट कुछ नहीं है। देश सेवा के अतिरिक्त वे और कुछ नहीं जानते।"[11]

वे अफ्रीका में रहते हुए और फिर भारत में आने के बाद भी अपने देशवाशियों के मन में स्वदेशाभिमान और एकता पैदा करना चाहते थे। 'मृत्यु का भय' छोड़ अपने देश के हित में अपना हित जोड़ने वाले जापानी लोगों जैसी देशभक्ति भारतीयों में गांधी जी देखना चाहते थे। अपने देश के लिए मर-मिटने का भाव उपजाना चाहते थे।

अफ्रीका में इस समय अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ाई गांधी जी लड़ रहे थे। इस लड़ाई के लिए जिस ऊर्जा और बलिदान की ज़रूरत थी, वह भारतीयों को जापान से सीखनी चाहिए। ऐसी मान्यता गांधी जी की थी। स्वार्थ और अपने प्राणों का मोह भारतीयों की लड़ाई को कमजोर कर रहा था। जापान का उदाहरण देने का कारण बताते हुए गांधी जी ने लिखा है-

'दक्षिण अफ्रीका में जो हम तुच्छ-सी लड़ाई लड़ रहे हैं इसमें हम ऐक्य नहीं पाते हैं, फूट-फाट चलती रहती है। स्वदेशाभिमान के बदले स्वार्थ अधिक दीख पड़ता है।...यदि हम लोग जापान के उदाहरण से प्रेरणा लेकर उसका थोड़ा-सा भी अनुकरण कर सकें तो जापान के युद्ध की कहानी पढ़ने की बात फलदायक होगी।"[12]

जापान की जीत का कारण उनका स्वार्थ से ऊपर उठकर देश के लिए सोचना है। उनमें किसी प्रकार की फूट नहीं है। अपने भेदभावों को उन्होंने अपने उद्देश्य के कारण छोड़ दिया है। गांधी जी जापान और रूस की बड़ी लड़ाई के सामने अपनी लड़ाई को 'तुच्छ-सी लड़ाई' इसलिए कहते हैं कि उसमें इतने प्रयास की भी ज़रूरत नहीं है। दक्षिण अफ्रीका की लड़ाई में भी जापान की तरह स्वदेशाभिमान और स्वार्थ को छोड़ने की सीख मिले।

जापान के नमक कर हटाने की प्रेरणा और नमक सत्याग्रह- गांधी जी ने 1905 में डॉ हचिन्सन का उल्लेख करते हुए जापान में नमक कर के समाप्त होने की बात लिखी थी। छोटे से इस लेख में ब्रिटिश सरकार के इस कानून को बर्बर बताया गया। इस लेख के 25 साल बाद गांधी जी ने जापान की तरह भारत में भी नमक के कानून को ख़त्म करने के लिए दांडी यात्रा (1930 में) की। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा नमक पर लगाए जाने वाले कर का विरोध किया। जापान के विषय में गांधी जी ने हचिन्सन के लेख का उल्लेख करते हुए लिखा है-

"भारत में नमक पर कर है, इसके विरोध में हमेशा आलोचनाएँ हुआ करती हैं। इस बार सुविख्यात डॉ. हचिन्सन ने इसकी आलोचना की है। वे कहते हैं कि जापान में इस प्रकार का कर था, वह अब समाप्त कर दिया गया है। फिर भी ब्रिटिश सरकार इसे कायम रखती है, यह बड़ी शर्म की बात है।"[13]

इस कानून को आगे हचिन्सन ने 'जंगली रिवाज' की संज्ञा दी है। जापान में नमक कर समाप्त हो सकता है इस बात से गांधी जी ही ने नहीं समस्त भारतीयों ने प्रेरणा ग्रहण की। जब किसी एक देश में ऐसा कानून ख़त्म होने की खबर किसी पराधीन देश को मिलती है तो वे भी स्वयं को ऐसे 'जंगली' कानूनों से मुक्त करने के लिए तैयार होने लगते हैं।

जापान की उन्नति के कारण- जापानी समाज कैसे इतना उन्नत हुआ? इसके कारणों पर छोटा लेकिन बड़े काम का लेख 'इंडियन ओपिनियन' में गांधी जी ने 2 सितम्बर 1905 को गुजराती में लिखा।[14] इस लेख में उन्होंने बताया कि बालक-बालिकाओं के लिए शिक्षण अनिवार्य बनाने और कला-कौशल के साथ उद्योग पर ध्यान देने आदि से यह

उन्नति आई। अपने देश के लिए जापानियों के कर्तव्य-भाव के कारण उन्होंने यह उन्नति प्राप्त की है। जापान का यह विकास एक दिन में नहीं हुआ है। इसका कारण शताब्दियों का संघर्ष है।

इसी साल एक छोटा लेख इस विषय पर लिखा कि ऑस्ट्रेलिया ने जापान से आने वाले विद्यार्थियों और व्यापारियों के लिए प्रवास के नियम लचीले किए हैं।[15] यह कदम जापान की बढ़ती शक्ति को दर्शाता है। इससे गांधी जी चाहते थे कि जापान जैसे शक्ति भारतीय भी अर्जित करें।

जापान में अंग्रेजी भाषा की गुलामी नहीं है- गांधी जी ने भारत में शिक्षा के लिए अंग्रेजी के पीछे भागते लोगों के लिए जापान का उदाहरण दिया। जापान में केवल कुछ लोग ही अंग्रेजी की शिक्षा लेकर उस भाषा का ज्ञान अपनी भाषा में लाते हैं। इस तरह से बड़ी जनसंख्या का समय भी बच जाता है और अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध ज्ञान भी अनुवाद के जरिये जापानी में आ जाता है। भारत में भी यही होना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है।

गांधी जी ने लिखा है-

"जापान में थोड़े-से गिने-चुने लोगों ने अंग्रेजी का उच्च ज्ञान प्राप्त किया है और फिर यूरोप की सभ्यता में जो-कुछ ग्रहण करने योग्य है उसे जापानी भाषा में प्रस्तुत करके लोगों के लिए सुलभ कर दिया है। इस प्रकार वे लोगों को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के व्यर्थ प्रयत्न से बचा लेते हैं।"[16]

गांधी जी ने यह भाषण गुजराती भाषियों के बीच 1916 ई. में दिया था। इसलिए आगे उन्होंने कहा कि यहाँ भी अंग्रेजी सभी को न पढ़कर कुछ लोगों को पढ़कर उस भाषा का श्रेष्ठ ज्ञान गुजराती भाषा में लाने का प्रयास करना चाहिए। इस तरह से ज्ञान प्राप्ति का काम अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के कारण रुकेगा नहीं। जापान की इस प्रेरणादायक भाषा-चेतना को गांधी जी ने कई बार अपने भाषणों और लेखों में उदाहरण स्वरूप उल्लेख किया।[17] जापान ने जैसे अंग्रेजी सीखने के व्यर्थ के प्रयत्न को सभी लोगों पर नहीं लादा है वैसे ही भारत में भी ऐसी ही भाषा-चेतना विकसित होनी चाहिए।

जापान में सबको शिक्षा- जापान ने अपने सभी देश वासियों को जापानी के माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा दी। इस बात को गांधी जी जापान की तरक्की का बड़ा कारण मानते हैं। भारत में भी अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं में शिक्षा दी जानी चाहिए। इस बात के लिए वे जापान का उदाहरण देते हैं-

"शिक्षा के कारण जापान के जन-जीवन में हिलोरें उठ रही हैं और दुनिया जापानियों का काम अचरज-भरी आँखों से देख रही है।"[18]

कुछ जापानी लोगों से भेंट-सम्वाद-पत्र-व्यवहार- गांधी जी की कई जापानी लोगों से मुलाकात भी हुई। इनमें प्रमुख रूप से निचिदात्सू फूजी, ओकित्सू और साईतो जी के अलावा ओताने जाकाता (या साकाता), योने नोगुची, ताकाओ जी, तोयोहिको कागावा और दो जापानी सज्जन आदि लोग थे।

ओताने जाकाता जी ने गांधी जी से प्रत्यक्ष कोई मुलाकात तो नहीं की थी। उन्होंने गांधी जी पर एक किताब 'सेंट हीरो गांधी' (शायद जापानी में गांधी जी पर सबसे पहली किताब) लिखी थी। उन्होंने गांधी जी को 30 अप्रैल 1924 को एक पत्र और एक किताब भेजी थी। किताब गांधी जी के बारे में थी। इस किताब के संशोधित संस्करण के लिए वे गांधी जी कुछ सामग्री चाहते थे। गांधी जी ने दो किताबों के लेखकों का उल्लेख कर वह पत्र वापस जापान में ओताने जाकाता जी को भेजा था।[19]

प्रसिद्ध राष्ट्रवादी जापानी कवि योने नोगुची जी (1874-1947) का रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941) से सन् 1915 से ही परिचय था। बाद में चीन पर हमले और युद्ध के विषय दोनों का विख्यात संवाद सन् 1938 में हुआ है। योने नोगुची जी लगभग साढ़े तीन महीने की भारत यात्रा पर 17 अक्टूबर 1935 से 4 फरवरी 1936 तक के लिए आए। गांधी जी से सन् 1936 में मिलने आए। गांधी जी उस समय काफी बीमार थे। इसलिए संवाद बहुत छोटा ही रहा। गांधी जी ने कविवर टैगोर के संदेश में ही अपने संदेश को मिलाकर देखने की बात नोगुची जी से की।[20]

जापानी सांसद ताकाओ जी से भी गांधी जी मुलाकात होती है। वे 1938 में गांधी जी से मिले। गांधी जी ने स्वदेशी की बात की। साथ ही जब ताकाओ जी ने पूछा कि 'एशिया एशिया वालों के लिए' नारे के बारे में गांधी जी क्या सोचते हैं? इस सवाल के जवाब में गांधी जी ने कहा कि यह संकीर्ण विचार है। यूरोप वालों के लिए एशिया और यूरोप एशिया वालों के लिए न होना संकुचित विचार है। गांधी जी ने इस विचार को पसंद नहीं किया।[21]

जापान के गांधी कहे जाने वाले[22] तोयोहिको कागावा जी (1888-1960) ईसाई मिशनरी, सहकारी आन्दोलनकर्ता, युद्धविरोधी समाजवादी धर्मप्रचारक थे। 1927 में दुनिया भर के अनेक महान लोगों ने लीग ऑफ़ नेशंस में अनिवार्य सैनिक सेवा के विरुध्द एक घोषणापत्र लिखा। इस घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों में रोमां रोलां, आइन्स्टाइन, टैगोर और गांधी थे। जापान से एक ही हस्ताक्षर मिला था। उनका नाम तोयोहिको कागावा था।[23] सैन्यवादी जापान में ऐसा कदम उस समय चुनौतीपूर्ण था। वे गांधी जी से 14 जनवरी 1939 को मिले। गांधी जी ने उनसे जापान द्वारा चीन पर किए जा रहे अत्याचार के बारे में पूछा। 'युद्ध के बारे में जापान के लोगों की भावनाएं' गांधी जी जानना चाहते थे। गांधी जी को उन्होंने कहा कि जापान में मेरी स्थिति एक विधर्मी की है।[24] गांधी जी से उन्होंने पूछा की यदि आप मेरी स्थिति में होते तो क्या करते?[25] गांधी जी ने कहा कि मैं अपने विधर्मी सिद्धांतों की घोषणा करने गोली खाकर मर जाता।[26] वे अधिकतर भारत की सहकारी संस्थाओं के बारे में और गीता के बारे में बातें करते हैं। भारत में सिंचाई से जुड़ी कुछ सहकारी समितियाँ हैं क्या? इसका गांधी जी ने जवाब देते हुए कहा कि "मेरे ख्याल से नहीं हैं। निस्संदेह आपके यहाँ ये सब चीजें हैं। आपने बहुत शानदार काम किए हैं। हमें आपसे बहुत-से चीजें सीखनी हैं।"[27] इसके बाद गांधी जी दोबारा चीन की बात पर आ जाते हैं और जापान के इस कदम की उनसे तीखी आलोचना करते हैं। इसका कागावा जी कोई जवाब नहीं देते हैं। वे अन्य विषयों पर अपनी बात करते हैं। 'गीता के अंत में कृष्ण हिंसा का उपदेश देते हैं'[28], सहकारी आन्दोलन, रामायण में सीता के चरित्र आदि पर अपनी बात वे करते हैं।

कागावा जी जापान के चीन पर हमले को 'जापान का पाप' मानते थे और अपने चीनी भाइयों से जापान को उसके पाप के लिए माफ़ करने की बात करते थे। अपने इन कार्यों के कारण वे जापानी सुरक्षाकर्मियों द्वारा गिरफ्तार किया गया।[31]

इन सभी सकारात्मक उदाहरणों से गांधी जी जापान के भारतीयों को बहुत-कुछ सीखने की निरंतर सलाह देते हैं। जापान भूगोल में भारत से बहुत छोटा देश होने के बावजूद अमेरिका और इंग्लैंड की बराबरी पर कैसे पहुँच गया है? जापान की उन्नति के कारणों की खोज में गांधी जी को अनेक उदाहरण मिलते हैं। उन उदाहरणों से गांधी जी भारतीयों का सम्बन्ध जोड़ते हैं। युद्ध के हिंसक उदाहरण से भी पराक्रम और बलिदान की भावना को सीखने लायक बताते हैं। लेकिन भारत आने के बाद और स्वदेशी आन्दोलन के समय जब जापान के व्यापार को देखते हैं तो उसमें उन्हें शोषण नजर आता है। जापान द्वारा कमजोर चीन पर हमला करने की भी गांधी जी आलोचना करते हैं। इन्हीं दो मुद्दों पर गांधी जी जापान की कटु-आलोचना करते हैं।

जापानी अधिकारी साईतो जी ने गांधी जी से मुलाकात की और कहा कि हम तो भारत को 'सस्ता माल' देते है। क्या उससे आपको 'कोई हानि' होती है? क्या भारतीयों को 'सस्ता माल सुलभ कराना' अच्छा नहीं है? इन बातों के जवाब में गांधी जी ने कहा कि जापान का यह कार्य भारतीयों की 'दरिद्रता बढ़ाता है'। जापानी सामान आने से भारतीयों का काम छिन जाएगा। इसलिए गांधी जी ने कहा कि 'हमारे हाथ-पैर का उपयोग बंद कराकर' हमें बेकार बना देना जापान का धर्म नहीं है।[32]

गांधी जी से मिलने आए निचिदात्सू फ़ूजी जी ने अपनी आत्मकथा में इस बात का भी उल्लेख किया है कि जापान व्यापार के इस तरीके से भारत का शोषण कर रहा था। सस्ता सामान भारत से खरीदकर आकर्षक दिखने और जल्दी ख़राब होने वाला सामान बेचकर जापान भारत का शोषण कर रहा है। इस तरह भारत कभी भी अपनी गरीबी को दूर नहीं कर पाएगा।[34]

जापान के बारे में गांधी जी की राय भारत आने के बाद काफी बदल चुकी थी। स्वदेशी आन्दोलन के समय जापानी कपड़ों के भारत में आने से गांधी जी का विचार काफी बदल जाता है। अब जापान भी इंगलैंड और अमेरिका की तरह शोषण करने वाला देश बन चुका था। चीन पर जापान के हमले और भारत में सस्ते और घटिया सामान को बेचने की नीति ने गांधी जी के मन में जापान की पुरानी छवि बदली। इसके बाद भी जापानी समाज की सौन्दर्य-चेतना और कुशलता की गांधी जी प्रायः प्रशंसा करते थे। जापान से आकर्षक और सस्ते कपड़े न आते रहें इसलिए भारतीयों को अपने खादी के कपड़ों को भी आकर्षक बनाने की वे सीख देते हैं।

जापानी कपड़ों के बारे में गांधी जी को एक पत्र जापानी कपड़ों के बारे में मिला। इस पत्र का उल्लेख उन्होंने 16 जुलाई 1931 को 'यंग इण्डिया' में किया। इसमें उन्होंने पत्र-लेखक द्वारा जापानी कपड़ों में दिखती जापानी कार्य-कुशलता की बात की है।[35] भारत में तैयार होने वाले खादी के कपड़ों में जापानी कुशलता अगर नहीं आई तो इस दौड़ में जापान जीत जाएगा।

गांधी जी से निचिदात्सू फूजी जी की मुलाकात 4 अक्टूबर 1933 को हुई थी। जिसमें गांधी जी ने भारत में बड़े पैमाने पर बौद्ध धर्म के पुनः प्रवर्तन की उनकी इच्छा का अपने तरीके से समाधान किया। साथ ही उन्हें बताया कि वर्तमान हिन्दू धर्म ने भगवान बुद्ध की मूल शिक्षाओं को अपना लिया है। निचिदात्सू जी को उन्होंने संस्कृत और पाली के साथ हिन्दुस्तानी ज़बान सीखने की सलाह भी दी। वे 1931 में भारत आकर शान्तिनिकेतन में रहते हुए गांधी जी से मिलने का इंतजार करते रहे। वे दो महीने तक वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में ही रहे। उन्होंने जापान लौटकर अहिंसा के बारे में किताब भी लिखी और दुनिया भर में शांति स्तूप भी बनवाए। उन्होंने गांधी जी के नॉन वायलेंस (अहिंसा) से प्रभावित होकर अपनी आत्मकथा का नाम रखा 'My non violence: An autobiography of a Japanese Buddhist'। गांधी जी ने निचिदात्सू फूजी जी और उनके साथ मौजूद ओकित्सू जी को सलाह देते हुए लिखा-

"आपके मन में जो यह इच्छा है कि भारत में बौद्ध-धर्म की पुनर्स्थापना हो, उसको मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ और मैं उसकी सराहना करता हूँ। केवल मैं आपको यह बताना चाहूँगा कि बौद्ध-धर्म का चाहे जो भी अर्थ हो, भगवान गौतम बुद्ध के उपदेशों के सार को हिन्दू-धर्म में समाविष्ट कर लिया गया है और मेरे ख्याल से तुलनात्मक दृष्टि से कहें तो, इस महान सुधारक के उपदेशों की शुद्धता को भारत में ही सबसे ज्यादा सुरक्षित रखा गया है।"[42]

गांधी जी एशिया के कई देशों में मौजूद बौद्ध धर्म के स्वरूप की आलोचना करते थे। श्रीलंका और बर्मा में बौद्ध धर्म को मानने वालों के आचरण में दिखी हिंसा के कारण ऐसा विचार गांधी जी ने प्रस्तुत किया था। जापान में भौतिकतावाद की अंधी दौड़ और पश्चिमी औद्योगिकीकरण के कारण उसके बौद्ध धर्म की शिक्षा को भी गांधी जी ठीक नहीं माना था। इसलिए उन्होंने भारत में ही बौद्ध धर्म के सही रूप और शिक्षा की बात कही थी। आगे गांधी जी ने लिखा है-

"इसलिए मैं आपको सुझाव देना चाहूँगा कि आप संस्कृत और पाली का अध्ययन करें और भगवान बुद्ध की शिक्षा के सम्बन्ध में अपने ज्ञान में अभिवृद्धि करें...चूँकि आप हिन्दुस्तानियों के सुख-दुःख के साथी बन गये हैं, मैं आपसे कहूँगा कि आप हिंदी अथवा हिन्दुस्तानी पढ़ने की अनिवार्यता को समझें और उस पर ध्यान दें।"[43]

शाम को चार बजे गांधी जी से मिलने पहुँचे। उन्होंने गांधी जी को देखकर तीन बार 'नाम म्यो हो रेंगे क्यो' मन्त्र का जाप किया और मुँह के सामने हाथ लाकर ताली बजाई। जापान में बने चावल के कुरकुरे और गोल पंखा भेंट किया। इस मुलाकात में गांधी जी ने कहा कि जापान का सब कुछ सुंदर और अमूल्य है। लेकिन यह अब भी महँगा है। क्या क्या इनसे भारत को जीतना चाहता है? निचिदात्सू फूजी जी के साथ मौजूद ओकित्सू जी ने पूछा कि क्या मैं पूछ सकता हूँ, किससे? गांधी जी ने जवाब दिया - सामानों और व्यापार से। ओकित्सू जी ने जवाब दिया कि चूँकि हम साधु हैं इसलिए हम व्यापार के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं। ये उपहार जापानी व्यापार के नमूने न होकर हमारी सच्चाई के प्रतीक हैं। बाद में चलकर कुछेक शब्द और एक-आध हिंदी वाक्य उन्होंने आश्रम में रहते हुए याद भी किए।[44]

जापान से गांधी जी ने तीन बंदरों का किस्सा लिया- गांधी जी के तीन बंदरों का किस्सा हम सभी भारतीयों ने अपनी बुनियादी तालीम के दिनों में पढ़ा और सुना है। एक तस्वीर जिसमें तीन बंदर मौजूद हैं। जिसमें एक बंदर ने अपने मुँह पर हाथ रखा है। दूसरे ने अपने कानों पर और तीसरे ने अपनी आँखों पर हाथ रखा है। जो 'बुरा न बोलो, बुरा न सुनो और बुरा न देखो' की नैतिक शिक्षा हमें देते हैं। यह तस्वीर और शिक्षा भारत भर में प्रचलित है। इसे सब लोग 'गांधी जी के तीन बंदर' के नाम से जानते हैं।

गांधी जी ने उल्लेख किया है कि जापान के कोबे नगर की मूर्ति किसी व्यक्ति ने उन्हें दी थी। यह मूर्ति किसने उन्हें दी थी इसका उल्लेख उन्होंने नहीं किया है। उन्होंने 21 फरवरी 1940 को मलिकंदा (वर्तमान बांगलादेश में) में भाषण देते हुए कहा- "मुझे पता नहीं, आपको जापान के कोबे नगर के तीन बंदरों की मूर्ति का हाल मालूम है या नहीं। उसी मूर्ति की एक छोटी-सी प्रतिकृति -एक खिलौना–किसी ने मुझे दे दिया था। उसमें तीन बंदर हैं। एक अपना मुँह बंद किए हुए, दूसरा आँखें बंद किए हुए और तीसरा कान बंद किए हुए है। वे संसार को यह उपदेश दे रहे हैं कि मुँह से बुरे वचन मत निकालो, आँखों से बुरी बातें मत देखो और कानों से गन्दी बातें मत सुनो। असहयोग का यही रहस्य है।"[45]

गांधी जी ने दूसरे विश्वयुद्ध के बीच में जापान के लोगों के नाम एक पत्र लिखा था। गांधी जी और जापान के सम्बन्ध को जानने के इच्छुक पाठकों के लिए भी यह पत्र उपयोगी होगा। इस पत्र का एक अंश है-

"शुरू में ही मुझे यह स्वीकार कर लेना चाहिय कि यद्यपि आपके लिए मेरे मन में कोई दुर्भाव नहीं है तो भी चीन पर आपके हमले को मैं बहुत ही नापसंद करता हूँ। अपनी महानता के ऊँचे शिखर से आप साम्राज्यवादी आकांक्षा के गर्त में उतर पड़े हैं।"[46]

आगे गांधी जी जापान को हिंदुस्तान पर किसी भी मकसद से हमला करने के लिए मना करते हैं-

"सच तो यह है कि हिंदुस्तान की आज़ादी के बारे में आपकी चिंता के जो समाचार हमें मिले हैं वे यदि विश्वसनीय हों तो ब्रिटेन द्वारा हिंदुस्तान की आज़ादी को मान लेने के बाद आपके पास हिंदुस्तान पर हमला करने का कोई बहाना नहीं रह जाना चाहिए।"[48]

आगे वे जापान को युद्ध के रास्ते से हटने की अपील करते हैं-

"आपसे मैं मानवता के नाम पर अपील करता हूँ। मुझे यह देखकर ताज्जुब होता है कि आप यह नहीं समझ पा रहे हैं कि क्रूरता पूर्ण युद्ध किसी एक की बपौती नहीं है। अगर मित्र-राष्ट्र आपको न हरा सकें तो दूसरी कोई ताकत आपके तरीके से बढ़िया तरीके निकालकर आपको आपके ही हथियार से आपको हरा देगी।"[49]

गांधी जी को मानने वाले यह विचार अवश्य मानेंगे कि हिंसा की अंतिम परिणति हिंसा में ही होती है। यही परिणति जापान की हुई। और जो राष्ट्र अब भी हिंसा के रास्ते चलकर तरक्की अथवा शांति (?) चाहते हैं, उनकी भी यही गति होनी है। इसलिए इस विचार को केवल विगत न समझकर आगे आने वाले समय के लिए बेहद आधुनिक और दूरदर्शी पुरखे की सबसे उचित सलाह मान कर हम सबको याद रखना चाहिए।

परमाणु बम द्वारा जापान पर अमरीका का अनुचित कदम- गांधी जी ने जापान के द्वारा चीन पर हमले की घोर निंदा की थी। जब दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के समय अमेरिका ने जापान के दो बड़े शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर छह और नौ अगस्त 1945 को परमाणु बम गिराया तब इसे एक अमेरिकी व्यक्ति ने गांधी जी से शांति लाने वाला प्रयास बताया। गांधी जी ने एक जुलाई 1946 को एक लेख में इस बात का जवाब दिया और कहा कि हिंसा से हिंसा ही पैदा हो सकती है, शांति नहीं। जापान के अनुचित कार्यों के बाद भी उसके साथ हुए घोर अमानवीय कार्य को गांधी जी अनुचित ही कहते हैं। इसे न्यायसंगत ठहराने का प्रयास करने वालों को अपना जवाब देते हैं। उन्होंने जापान के बारे में लिखा है-

"मैं मानता हूँ कि जापान का लोभ अधिक अनुचित था। लेकिन उसका लोभ अनुचित होने से कम अनुचित लोभ वालों को जापान के एक क्षेत्र-विशेष के स्त्री-पुरुष और बच्चों का संहार करने का अधिकार तो नहीं मिल गया।"[50]

गांधी जी जापान के तत्कालीन व्यवहार में मौजूद त्रुटियों पर अपनी राय देते हैं। अमरीका द्वारा जापान के साथ हुए अमानवीय व्यवहार के बाद भी जापान के दोषों को नजरअंदाज नहीं करते हैं। अमरीका ने जापान के साथ जो संहारक दुष्कृत्य किया, उसे भी गांधी जी किसी प्रकार जायज नहीं ठहराते हैं। किसी व्यक्ति, समाज या देश में दोष देखने के बाद उसके साथ होने वाले अमानवीय कार्यों को गांधी जी कभी भी न्यायसंगत नहीं कहते हैं। जिस प्रकार शक्तिशाली जापान ने कमजोर चीन पर हमला किया तो गांधी जी ने चीन के लोगों का पक्ष लिया उसी प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध में अमरीका ने शक्तिशाली जापान के बेक़सूर लोगों को मारा तो गांधी जी ने लोगों के पक्ष में अपनी बात कही।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. गांधी जी ने जापान के बारे में छोटे-बड़े कई लेख लिखे। जिनमें से कम से कम आठ ऐसे लेख हैं जो जापान पर ही केन्द्रित हैं- 'जापानी सूतक-नियम'-खंड 3, पृष्ठ 473-74; 'ज्युजित्सू'-खंड 5, पृष्ठ 447; 'जापान की उन्नति'-खंड 5, पृष्ठ 60; 'जापान की चाल'- खंड 6, पृष्ठ 301; 'साहसी जापानी सैनिक', अंग्रेजी खंड 9, पृष्ठ 424-25; 'जापान की सलाह', खंड 28, पृष्ठ 66; 'जापानी खतरा', खंड 47, पृष्ठ 155; 'हर जापानी से', खंड 76, पृष्ठ 344-48। दूसरे देशों के साथ जापान को विषय बनाकर पाँच लेख लिखे- 'राक्षसों की लड़ाई: जापान और रूस', खंड 4, पृष्ठ 401; 'जापान और रूस', खंड 4, पृष्ठ 498-99; 'आस्ट्रेलिया और जापान', खंड 5, पृष्ठ 120; 'जापान और ब्रिटिश उपनिवेश', खंड 5, पृष्ठ 143; 'जापान और अमेरिका', खंड 6, पृष्ठ 295। पाँच लेखों में जापानी लोगों से भेंट का उल्लेख मिलता है- 'सलाह: जापानी बौद्ध स्थविरों को', खंड 56, पृष्ठ 57-58; 'भेंट: योने नोगुची को', खंड 62, पृष्ठ 189-91; 'प्रश्नोत्तर', खंड 64, पृष्ठ 130-35; 'बातचीत: डी ताकाओका के साथ', खंड 68, पृष्ठ 207-9; 'बातचीत: तोयोहिको कागावा के साथ', खंड 68, पृष्ठ 326-30। एक पत्र-व्यवहार का भी उल्लेख मिलता है- 'पत्र: ओताने जाकाता को', खंड 23, पृष्ठ 537। इनके अलावा अनेक स्थलों पर जापान का गांधी जी ने अनेक संदर्भों में उल्लेख किया है। कुछेक सन्दर्भ निम्नलिखित हैं- 5:10 (खंड 5, पृष्ठ 10), 6:471-72, 13:300-03, 14:15-39, 27:408, 49:414-17, 71:287-92, 75:265-71, 75:293, 78:204-9, 87:243-45, 87:334-36, 87:351-52, 87:363-64, 87:418-21। सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, हिंदी में खंड 1-97, अंग्रेजी में खंड 1-100, 1884-1948, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार
2. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 20, पृष्ठ 158
3. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 62, पृष्ठ 190
4. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 6, पृष्ठ 471
5. निचिदात्सू फूजी जी, ओकित्सू जी, योने नोगुची जी, डी. ताकाओका जी, तोयोहिको कागावा जी और साईतो जी आदि लोगों से गांधी जी की मुलाकात हुई। 'सलाह: जापानी बौद्ध स्थविरों को', खंड 56, पृष्ठ 57-58; 'भेंट: योने नोगुची को', खंड 62, पृष्ठ 189-91; 'प्रश्नोत्तर', खंड 64, पृष्ठ 130-35; 'बातचीत: डी ताकाओका के साथ', खंड 68, पृष्ठ 207-9; 'बातचीत: तोयोहिको कागावा के साथ', खंड 68, पृष्ठ 326-30; 'प्रश्नोत्तर', खंड 64,पृष्ठ 130-33।
6. "The Most Venerable Nichidatsu Fujii, first called as Guruji (Guruji means master; ji is an honorific title) by Mahatma Gandhi…", Buddhism for world peace, words of Nichidatsu Fujii, Translated by Yumiko Miyazaki, Japan-Bharat Sarvodaya Mitra Sangh, Tokyo, 1980, pp 11
7. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, खंड 6, 1906-1907, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, संस्करण फरवरी 1962, पृष्ठ 471
8. The Collected Works of Mahatma Gandhi, Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting, Indian Governments, Volume 3 , Years 1898-1903, Revised Second Edition June 1979, pp 535
9. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, खंड 4, 1903-1905, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, संस्करण अगस्त 1960, पृष्ठ 401
10. वही, पृष्ठ 447
11. वही, पृष्ठ 498-99
12. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 4, पृष्ठ 499
13. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 5, पृष्ठ 10
14. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 5, पृष्ठ 61
15. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 5, पृष्ठ 120
16. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 13, पृष्ठ 302

17. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 14, पृष्ठ 21
18. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 14, पृष्ठ 22
19. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 23, पृष्ठ 537
20. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 62, पृष्ठ 190-91
21. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 68, पृष्ठ 207-09
22. Kagawa of Japan, Cyril J. Davey, Abingdon Press, 1960, pp 137
23. In 1927, a manifesto against military conscription was presented to the League of Nations. It was signed by such men as Romain Rolland, Einstein, Tagore, Gandhi. The only Japanese name was that of Kagawa-and it singled him out as a potential enemy of the militarists whose power was growing in Japan., Kagawa of Japan, Cyril J. Davey, Abingdon Press, 1960, pp 90
24. The Collected Works of Mahatma Gandhi, Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting, Indian Governments, Volume 68, pp 295
25. ibid
26. ibid
27. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 68, पृष्ठ 327
28. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 68, पृष्ठ 328
29. Kagawa of Japan, Cyril J. Davey, Abingdon Press, 1960, pp 111
30. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 64, पृष्ठ 130-33
31. Fujii, Nichidatsu, My non violence: An autobiography of a Japanese Buddhist, Japan Buddha Sangha Press, Tokyo, 1975, Pp 79
32. Young India, A Weekly Journal, Ed. M.K. Gandhi, Volume xiii, no. 29, 16 July 1931, pp 178
33. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, खंड 56, 16-सितम्बर-1933 : 15-जनवरी-1934, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, संस्करण जनवरी 1974, पृष्ठ 57-58
34. वही
35. Buddhism for world peace, words of Nichidatsu Fujii, Translated by Yumiko Miyazaki, Japan-Bharat Sarvodaya Mitra Sangh, Tokyo, 1980, pp 45-73
36. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, खंड 56, 16-सितम्बर-1933 : 15-जनवरी-1934, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, संस्करण जनवरी 1974, पृष्ठ 57-58
37. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, खंड 76, 1 अप्रैल 1942 : 17 दिसम्बर 1942, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, संस्करण मई 1983, पृष्ठ 344
38. वही, पृष्ठ 346
39. वही, पृष्ठ 346-47
40. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, खंड 84, पृष्ठ 382